THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

जैसे हम माफ करते हैं।

As we forgive

Christian Science Monitor May 22-28, 2004

मैने ऐसा क्या किया है? कभी न कभी हम सभी इस तथ्य का सामना करते हैं कि हमने कुछ गलत कर दिया है और उसके लिए माफी चाहते हैं।

लगभग दो वर्ष पहले, मैंने इस की तीव्र इच्छा महसूस की थी। मैं किसी ऐसी बात के लिए माफी पाने के लिए लालायित थी जो बहुत गलत साबित हुई थी। मैंने यह जानने के लिए प्रार्थना की, कि क्या कहूँ और क्या करूँ और यहाँ तक कि क्या सोचूँ। तब मैं दाता की प्रार्थना की इस पंक्ति द्वारा आकर्षित हुई : "हमें हमारे कर्ज़ माफ कर दो जैसे हम अपने कर्ज़दारों को माफ करते हैं"। वह दो अक्षरों का शब्द "जैसे" था जिस ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

मैंने उन्हें कितनी अच्छी तरह माफ किया है जिन्होंने मेरे साथ अन्याय किया था या मुझे दुःख पहुँचाया था? कुछ मामलों में मैंनें लोगों को पूरी तरह माफ कर दिया था। कुछ अन्य मामलो में बिल्कुल भी नहीं। यह कोई बड़ी बातें नहीं थी जो मैंनें माफ नहीं की थीं। मैंनें संकोच से माना कि मुझे अब भी उन के खिलाफ कुछ शिकायतें थी जिन्होंनें वर्षो पहले बहुत ही मामूली तरीकों से मेरी उपेक्षा की थी।

मैंने दाता की प्रार्थना को वहाँ देखा जहाँ मत्ती के सुसमाचार में यह आती है। अपने शिष्यों को यह प्रार्थना सिखाने के बाद, मत्ती में वर्णन है कि जीसस ने स्पष्ट रूप से जोड़ा, "इसलिए यदि तुम इंसानों के अपराध माफ कर दोगे, तुम्हारा स्वर्गिक **पिता** भी तुम्हें माफ कर देगा: परन्तु यदि तुम इंसानों के अपराध माफ नहीं करोगे, तुम्हारा **पिता** भी तुम्हारे अपराध माफ नहीं करेगा।"

मैंने स्वयं से पूछा कि मैं किस तरह माफी चाहती थी उसके लिए जो मैंने गलत किया था, मेरी गलतियों के लिए, मेरे कठोर शब्दों के लिए, मेरे स्वार्थ के लिए, मेरी सारी त्रुटियों के लिए। यह मेरे लिए कभी भी उत्तर देने के लिए सब से आसान प्रश्न था। मैं पूरी तरह माफी चाहती थी, पूर्ण रूप से, बिना किसी शर्त के। परन्तु दाता की प्रार्थना के अनुसार मुझे भी दूसरों को उसी तरह माफ करना था। कई महीनों तक मैनें काफी हद तक मन के घर-की-सफाई की। एक एक करके मैंनें पुरानी गलतियों को माफ किया, बड़ी और छोटी, उतनी ही पूरी तरह जिस प्रकार मैं माफी चाहती थी। अंत में मुझे पहले जिक्र की गई घटना के लिए माफी मिल गई।

** जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

फिर एक दिन काम पर, एक नई सहकर्मी ने तब गुस्से से प्रतिक्रिया की, जिसने एक फैसला जल्दी में लिया था, जब मैंनें कुछ ऐसा बताया जिसे वह शायद ध्यान में लेना चाहे। वास्तव में वह इतनी नाराज़ हो गई कि उसने मेरी बाँह कस कर पकड़ी और उसे ज़ोर से हिला दिया। चाहे मैंनें उस क्षण स्थिति को शाँति से संभाल लिया, बाद में मैं भयभीत तथा अति क्रोधित थी। मैंनें तर्क किया कि क्या मैं कर्मचारी विभाग को मिलूँ, लेकिन उस दिन शुक्रवार था और मेरे पास जल्दी जाने का अवसर था और जल्दी में फैसला न लेने का। मैं इस विषय पर सोचने के लिए घर चली गई।

पहला काम मैंनें अपने पति को बताने का किया कि क्या हुआ था और इसने उसे भी उतना ही क्रुद्ध बना दिया जितनी कि मैं थी। सप्ताहांत की आधी छुट्टी मैंनें इस घटना पर परेशान होते हुए बिताई, सारा समय मेरी बाँह में दर्द होता रहा। अन्त में मुझे याद आया जो कि मैं महीनों से कर रही थी – दूसरों को माफ करना जिस प्रकार मैं माफी चाहती थी। मैं जान गई थी कि मुझे अपनी सहकर्मी को भी इसी तरह माफ करना होगा।

भजनसंहिता 51 एक प्रार्थना है, जो राजा डेविड ने परस्त्री से संबंध रखने के बाद और फिर कुलटा स्त्री के पति का कत्ल करवाने के बाद की थी (II शमूएल 11, 12 देखो)। अपराध की चरमसीमा का बोध होने पर, राजा डेविड ने **परमेश्वर** से माफी की भीख माँगी, "मुझ पर दया करो, हे **परमेश्वर**, अपनी प्रेममयी दयालुता के अनुसार – – – मेरे पापों से अपना मुख मोड़ लो और मेरे सभी अपराधों को मिटा दो।"

भजनसंहिता 51 पढ़ने के बाद मैं राजा डेविड की दयनीय मृदुता से बहुत प्रभावित हुई और मुझे एक बार फिर सामना करना पड़ा कि मैं स्वयं गलत काम (पाप के लिए दूसरा शब्द) करने से मुक्त नहीं थी । मैंने भजनसंहिता 51 के लिए बाइबल खोली और इस स्त्री के लिए प्रार्थना की, "मुझ पर" तथा "मैं" के स्थान पर उसका नाम जोड़ कर। मैंनें प्रार्थना की, "उस पर दया करो, हे **परमेश्वर**, उसके पापों से अपना मुख मोड़ लो, और उसके सारे अपराध मिटा दो। उस में एक स्वच्छ हृदय की रचना करो – – – उसे अपनी उपस्थिति से दूर मत करो – – – अपने मोक्ष की प्रसन्नता उसे वापिस करो।"

जब मैंनें इस तरह भजनंसहिता से प्रार्थना की, मैंनें इस व्यक्ति के लिए अथाह प्रेम अनुभव करना शुरू कर दिया और हम दोनों के लिए **परमेश्वर** के प्रेम की एक महान् अनुभूति। वह अवश्य ही हमारे पापों को मिटा देता है और हमें **अपनी** उपस्थिति में वापिस लाता है। मैंनें अपनी नई सहकर्मी को अपने पूर्ण हृदय से माफ कर दिया और सच में घटना के बारे में भूल गई। मेरी सप्ताहांत की बाकी की छुट्टी बहुत बढ़िया थी।

कुछ दिनों बाद, मैं उस स्त्री को सभाभवन के रास्ते में मिली। तुरन्त ही उसने, जो कुछ भी हुआ था, उसके लिए दिल से माफी की माँग की, जिसे मैंनें विनम्रता से स्वीकार कर लिया, आभारी हूँ कि उसके प्रति दुर्भावना का कोई भी अंश बाकी नहीं रहा था। वास्तव में मुझे अनुभव हुआ जैसे कि मेरे भी कुछ पाप मिट गए थे।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.